

# MASTER NEGATIVE NUMBER

6091.21

---

*Tiruppukalamirtam*  
*Malar 3, ital 5*  
*August 1938*

Record no. 166

திருப்புகழ்மீர்தம்  
மலர் 3, இதழ் 5  
*August 1938*

Record no. 166

*Tiruppukalamirtam*  
*Malar 3, ital 5*  
*August 1938*

Record no. 166

உ  
இம் குறைய நம:

# திருப்புகழ்மீர்தம்.

(All Rights Reserved)

“குருப்புகழை மேவுகின்ற கொற்றவன் ஞன்போற்றங்  
திருப்புகழைக் கேளீர் தினம்”

மலர்  
3  
Vol.  
3

வெகுதாங்கியவன ஆவனியர்  
ஆகஸ்ட்-1938

இதழ்  
5.  
No.  
5.

## திருப்புகழ்.

பழநி-(திருவாவியங்குடி)

நரத லிங்கக லாதீ ந மோநம  
வேத மந்திரசொ ழுபா நமோநம  
ஞான பண்டித சாமீ நமோநம  
நாம சம்புகு மாநா ந மோநம  
போக அந்தி பாலா நமோநம  
நாகபந்தம் பூரா நமோநம  
சேத தண்டலி நோதா நமோநம  
கீத கிண்கிணி பாநா நமோநம  
தீர சம்பரம வீரா நமோநம  
தீப மங்கள ஜோதி நமோநம  
நாய அம்பல லீலா நமோநம  
தேவ குஞ்சரி பாநா நமோநம  
சத லும்பல கோலால பூனையும்  
ஓத லுங்குண ஆசாந நீதியும்  
ஈர முங்குரு சீர்பாந சேவையு  
எந்த லம்புகழ் காலேரி யால்விளை  
சோழ மண்டல மீதே மனோகர  
ராஜ கெம்பிர நாடாளுநாயக

வெகு கோடி  
பரகூரர்  
கிரிஜா  
அருள்தாராய்  
மறவாத  
வயவூரா

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150	151	152	153	154	155	156	157	158	159	160	161	162	163	164	165	166	167	168	169	170	171	172	173	174	175	176	177	178	179	180	181	182	183	184	185	186	187	188	189	190	191	192	193	194	195	196	197	198	199	200	201	202	203	204	205	206	207	208	209	210	211	212	213	214	215	216	217	218	219	220	221	222	223	224	225	226	227	228	229	230	231	232	233	234	235	236	237	238	239	240	241	242	243	244	245	246	247	248	249	250	251	252	253	254	255	256	257	258	259	260	261	262	263	264	265	266	267	268	269	270	271	272	273	274	275	276	277	278	279	280	281	282	283	284	285	286	287	288	289	290	291	292	293	294	295	296	297	298	299	300	301	302	303	304	305	306	307	308	309	310	311	312	313	314	315	316	317	318	319	320	321	322	323	324	325	326	327	328	329	330	331	332	333	334	335	336	337	338	339	340	341	342	343	344	345	346	347	348	349	350	351	352	353	354	355	356	357	358	359	360	361	362	363	364	365	366	367	368	369	370	371	372	373	374	375	376	377	378	379	380	381	382	383	384	385	386	387	388	389	390	391	392	393	394	395	396	397	398	399	400	401	402	403	404	405	406	407	408	409	410	411	412	413	414	415	416	417	418	419	420	421	422	423	424	425	426	427	428	429	430	431	432	433	434	435	436	437	438	439	440	441	442	443	444	445	446	447	448	449	450	451	452	453	454	455	456	457	458	459	460	461	462	463	464	465	466	467	468	469	470	471	472	473	474	475	476	477	478	479	480	481	482	483	484	485	486	487	488	489	490	491	492	493	494	495	496	497	498	499	500	501	502	503	504	505	506	507	508	509	510	511	512	513	514	515	516	517	518	519	520	521	522	523	524	525	526	527	528	529	530	531	532	533	534	535	536	537	538	539	540	541	542	543	544	545	546	547	548	549	550	551	552	553	554	555	556	557	558	559	560	561	562	563	564	565	566	567	568	569	570	571	572	573	574	575	576	577	578	579	580	581	582	583	584	585	586	587	588	589	590	591	592	593	594	595	596	597	598	599	600	601	602	603	604	605	606	607	608	609	610	611	612	613	614	615	616	617	618	619	620	621	622	623	624	625	626	627	628	629	630	631	632	633	634	635	636	637	638	639	640	641	642	643	644	645	646	647	648	649	650	651	652	653	654	655	656	657	658	659	660	661	662	663	664	665	666	667	668	669	670	671	672	673	674	675	676	677	678	679	680	681	682	683	684	685	686	687	688	689	690	691	692	693	694	695	696	697	698	699	700	701	702	703	704	705	706	707	708	709	710	711	712	713	714	715	716	717	718	719	720	721	722	723	724	725	726	727	728	729	730	731	732	733	734	735	736	737	738	739	740	741	742	743	744	745	746	747	748	749	750	751	752	753	754	755	756	757	758	759	760	761	762	763	764	765	766	767	768	769	770	771	772	773	774	775	776	777	778	779	780	781	782	783	784	785	786	787	788	789	790	791	792	793	794	795	796	797	798	799	800	801	802	803	804	805	806	807	808	809	810	811	812	813	814	815	816	817	818	819	820	821	822	823	824	825	826	827	828	829	830	831	832	833	834	835	836	837	838	839	840	841	842	843	844	845	846	847	848	849	850	851	852	853	854	855	856	857	858	859	860	861	862	863	864	865	866	867	868	869	870	871	872	873	874	875	876	877	878	879	880	881	882	883	884	885	886	887	888	889	890	891	892	893	894	895	896	897	898	899	900	901	902	903	904	905	906	907	908	909	910	911	912	913	914	915	916	917	918	919	920	921	922	923	924	925	926	927	928	929	930	931	932	933	934	935	936	937	938	939	940	941	942	943	944	945	946	947	948	949	950	951	952	953	954	955	956	957	958	959	960	961	962	963	964	965	966	967	968	969	970	971	972	973	974	975	976	977	978	979	980	981	982	983	984	985	986	987	988	989	990	991	992	993	994	995	996	997	998	999	1000	1001	1002	1003	1004	1005	1006	1007	1008	1009	1010	1011	1012	1013	1014	1015	1016	1017	1018	1019	1020	1021	1022	1023	1024	1025	1026	1027	1028	1029	1030	1031	1032	1033	1034	1035	1036	1037	1038	1039	1040	1041	1042	1043	1044	1045	1046	1047	1048	1049	1050	1051	1052	1053	1054	1055	1056	1057	1058	1059	1060	1061	1062	1063	1064	1065	1066	1067	1068	1069	1070	1071	1072	1073	1074	1075	1076	1077	1078	1079	1080	1081	1082	1083	1084	1085	1086	1087	1088	1089	1090	1091	1092	1093	1094	1095	1096	1097	1098	1099	1100	1101	1102	1103	1104	1105	1106	1107	1108	1109	1110	1111	1112	1113	1114	1115	1116	1117	1118	1119	1120	1121	1122	1123	1124	1125	1126	1127	1128	1129	1130	1131	1132	1133	1134	1135	1136	1137	1138	1139	1140	1141	1142	1143	1144	1145	1146	1147	1148	1149	1150	1151	1152	1153	1154	1155	1156	1157	1158	1159	1160	1161	1162	1163	1164	1165	1166	1167	1168	1169	1170	1171	1172	1173	1174	1175	1176	1177	1178	1179	1180	1181	1182	1183	1184	1185	1186	1187	1188	1189	1190	1191	1192	1193	1194	1195	1196	1197	1198	1199	1200	1201	1202	1203	1204	1205	1206	1207	1208	1209	1210	1211	1212	1213	1214	1215	1216	1217	1218	1219	1220	1221	1222	1223	1224	1225	1226	1227	1228	1229	1230	1231	1232	1233	1234	1235	1236	1237	1238	1239	1240	1241	1242	1243	1244	1245	1246	1247	1248	1249	1250	1251	1252	1253	1254	1255	1256	1257	1258	1259	1260	1261	1262	1263	1264	1265	1266	1267	1268	1269	1270	1271	1272	1273	1274	1275	1276	1277	1278	1279	1280	1281	1282	1283	1284	1285	1286	1287	1288	1289	1290	1291	1292	1293	1294	1295	1296	1297	1298	1299	1300	1301	1302	1303	1304	1305	1306	1307	1308	1309	1310	1311	1312	1313	1314	1315	1316	1317	1318	1319	1320	1321	1322	1323	1324	1325	1326	1327	1328	1329	1330	1331	1332	1333	1334	1335	1336	1337	1338	1339	1340	1341	1342	1343	1344	1345	1346	1347	1348	1349	1350	1351	1352	1353	1354	1355	1356	1357	1358	1359	1360	1361	1362	1363	1364	1365	1366	1367	1368	1369	1370	1371	1372	1373	1374	1375	1376	1377	1378	1379	1380	1381	1382	1383	1384	1385	1386	1387	1388	1389	1390	1391	1392	1393	1394	1395	1396	1397	1398	1399	1400	1401	1402	1403	1404	1405	1406	1407	1408	1409	1410	1411	1412	1413	1414	1415	1416	1417	1418	1419	1420	1421	1422	1423	1424	1425	1426	1427	1428	1429	1430	1431	1432	1433	1434	1435	1436	1437	1438	1439	1440	1441	1442	1443	1444	1445	1446	1447	1448	1449	1450	1451	1452	1453	1454	1455	1456	1457	1458	1459	1460	1461	1462	1463	1464	1465	1466	1467	1468	1469	1470	1471	1472	1473	1474	1475	1476	1477	1478	1479	1480	1481	1482	1483	1484	1485	1486	1487	1488	1489	1490	1491	1492	1493	1494	1495	1496	1497	1498	149
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	-----

ஆத்ரம்பயி லாஜார் தோழமை

சேர்தல் கொண்டவ றோடே முனளினில்

ஆடல் வெம்பரி மீதேறி மாகயி

லைலேசி

ஆதி யந்த்வு லாவாகப் பாடிய

சேரர் கொங்குவை காலூர் நடுடதில்

ஆவி னன்குடி வாழ்வான தேவர்கள் பெருமானே

பதவுரை

நதனுட்-இரப்பவர்க் கில்லைபென்னுது ஈந்து உதனிகெசையும் சகையம், பல கோலாவ பூசையும் - பற்பலவாறு கோலாகலமாக (ஆடல் பாடல் விழா மேள தாளம் முதலியவைகளுடன் கூடி) செசையும் பூசையும், ஓதலும்-வேதம் ஆகமம் முகலிய அறிவு நூல்களையும், தேவாரம் திருவாசகம் முதலிய முத்தி நூல்களையும் ஓதிபுணருந் தன்னையும், குண ஆசாரீரீதியும் - நற்குணம் நல்லொழுக்கம் சிவநெறியில் நிற்கும் நன்னிலை இலவகளுந், ஈரமும் - கருணையும், குருசீர்பாக சேவையும் - சர்துருமுர்த்தியினுடைய சிறந்த சரணா விந்தங்களைச் சேவித்து தொண்டிபுரில் முதலிய நன்னெறிகளை, மற்றாத - ஒருகாலத்திலும் மற்றாத தன்னையுடைய நல்லவர்கள் வாழுகின்றதும், எழ்தலன்புகழ் - எழு திவினர்களாலும் புகழ்ப்படுகின்ற, காவேரியால் கிளை - காவேரி நதி பாய்தலினால் வளம்பெறுவதுமாகிய, சோழமண்டல மீது - சோழ மண்டலத்தின்கண், யனோக - மனச்சைத் தவருந் வளப்பிச வள யுடையதான், ராஜ கெம்பிர நாடு ஆனும் நாயக - ராஜ கெம்பிர வள நாடு என்னும் பகுதியை அரசு செய்யும் தலைவரே! வயலூர் - (அந்த ராஜகெம்பிர வளநாட்டின் மத்தியிலுள்ள) வயலூர் என்னும் திருத்தலத்தில் எழுந்தருளியுள்ளவரே! ஆதர்ப்பயில் - அன்புபொருத்திய, ஆருர தோழமை சேர்த்தல்கொண்டு - சந்தரமுர்த்தி சுவாமிகளுடைய நட்பை மிகவும் நெருக்கமாகக்கொண்டு, அவரோடே - அவர் (ஆருர) திருக்கைவாயத்திற்குப் புறப்பட்டபோது அவருடனேயே, முன் நாளினில் - முன்னொரு நாளில், ஆடல் வெம் பரிமீது ஏறி - ஆடுவதும் போருக்குரிய உக்கிரமுமுடையதுமாகிய புரவியின் மீது ஏறிக்கொண்டு, மா கயிலையில் ஏகி - பெருமை பொருந்திய திருக்கை வாய மலைத்தச்சென்று, ஆதி அந்த உலா ஆச பாடிய - அந்தாதி யாகவுடைய ஆதி கைவாச உலாவை ஆச கவியாகப் பாடியபுளிய, சேரர் கொங்கு வை காலூர் நன்னுடதில் - சோமான்பெருமான் நாய லார் அரசு செய்யும் பாக்கியத்தைப்பெற்ற கொங்கு தேயத்திலுள்ள

நல்காலூர் நாட்டின்கண் விளங்கும், ஆகின்ன்குடி வாழ்வான- திரு வாகின்னனகுடி என்னும் திருத்தலத்தில் எழுந்தருளியுள்ள, தேவர்கள் பெருமானே - தேவர்களுக்கெல்லாம் தேவாகிய பெருமையையுடைய வரே! நாத்த கிந்து கலை அதிதா - நாத்த கிந்து கலை, என்பவைகட்கும் அப்பாற்பட்டும் நிற்பவரே!, நமோ நம - நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், வேத மந்தர் சொருபா - வேதமந்திரங்கனின் வடிவமாக விளங்குபவரே! நமோ நம - நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், ஞானபண்டித ஸ்வாமீ - ஞான வல்லுனரே!, நமோ நம - நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், வெரு கோடி நாம சம்பு குமாரா - அநேக கோடி திருநாமங்களையுடைய சிவபெருமானது திருக்குமாரரே!, நமோ நம - நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், போக அந்தரி பாவா - நலன்களை அனுபவிக்கச்செய்யும் போக சத்தியாகிய உமா தேவியாரது புதல்வரே!, நமோ நம - நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், நாக பந்த மயூரா - கால்களில் பாப்புகள் சுற்றப்பட்டுள்ள மயில்வாக னத்தையுடையவரே!, நமோ நம - நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், பா சூரர் சேத தண்ட விகோதா - பகைகொண்டு வந்த சூரநிபவனர்களைத் தண்டித்து சேதித்தருளிய திருவிளையாடலைப் புரிந்தவரே!, நமோ நம - நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், கீத கிண்கிணி பாதா - இனிய நாத்த கோடு கூடிய சதங்கைகளை யன்றதுள்ள திருவடி யுடையவரே!, நமோ நம - நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், தீர - னைதியத்தையுடையவரே!, சம்பரம் - சம்பிரமமுடையரே!, விரா - சிறந்த வீரரே!, நமோ நம - நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், கிரிஜா - பகைகளுக்கு நாயகரே!, தீப மங்கள ஜேதி - ஞானச் சுடர்விளக்காகிய அருட்பெருஞ்ஜேதியே!, நமோ நம - நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், தூய அம்பல விவா - பரிசுத்தமாகிய தகராகரயத்தில் ஆனந்தத்தாண்டவம் புரிந்தருள்பவரே!, நமோ நம - நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், தேவ குஞ்சரி பாகா - தெய்வயானையம்மை யாயா லார் பாகத்தில் உடையவரே!, நமோ நம - நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், அருள் தாராய் - அடிபேயனுக்குத் தேவீருடைய திருவருளைத் தந்து அருளவேண்டும்,

பொழிப்புரை.

இல்லையென்றிற்கும் இரவருக்கு இல்லைபென்னுது சகையும், பற்பலவிதமான சம்பிரமத்தோடு கூடிய பூசையும், வேதமாகாதி அறிவு நூல்களையும் தேவா திருவாசகமுதலிய முத்தி நூல்களை ஓதிபுணர்தலும், நற்குணங்களும், நல்லொழுக்கமும், நல்ல நீதிகளும், உயிர்

களிடத்தில் இரக்கமும், குருநாதனுடைய திருவடித்தாமரைமையற்ற வாத்தன்மையுமாகிய சிறந்த நற்குணங்களுடையவா வாழ்கின்றது, சத்ததீவினர்களால் புசுழ்ப்படுகின்ற காளீநதியால் வளமுறு விளங்குவதுமாகிய சோழமண்டலத்தில் மனத்தைக்கவரும் வனப்புடைய ராஜகேம்பீர வள நாட்டினை அரசாளும் நாயகரே!, அந்நாட்டில் மிகவும் சிறப்புடன்கிளங்கும் வயலுரில் வாழ்வரே!, தம்மிடத்து மிகவும் அன்பு பொருந்திய சுந்தரமூர்த்தி கவாடிகளது நட்பைப்பெற்று, அப்பொருத்தகையார் திருக்கைவாயத்திற்குப் புறப்பட்டபோது அவருடனேயே, முன்னிலில் வெப்பத்தோடு கூடி நடக்கும் குதிரையின் மீது ஏறி பெருமைய பொருந்திய திருக்கைவாயலைக்குச் சென்று, திருக்கைவாச ஆதிவள என்னும் பிரபந்தத்தை அங்கு ஆசைகளாய்கப் படியுருளிய சோமரன்பெருமான் நாயனார் அரகசெய்யும் பேற்றைப் பெற்ற கொங்குதேயத்தில் நல்ல காலுர் நாட்டிலுள்ள திருவாலினன்குடி என்னும் திவ்விபேசுத்தந்திரத்தில் எழுந்தருளியுள்ளவரே! தேவர்கள் பெருமாளே! நாட்கள் வீந்து கலை என்பவகைட்கும் அப்பாற்பட்டிருப்பவரே! நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், வேத மந்திர சொரூபரே! நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், ஞானபண்டிதரே! நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், அநேக கோடி திருநாமங்களையுடையவரும் சுககாரணருபாய சிவபெருமானுடைய திருக்குமாரரே! நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், வீணையுடன்கணைத்துப் பக்கச்செய்யும் போகசத்தியாகிய சிவகாபியம்மையா துதிருப்பதல்வரே! நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், கால்களில் அரவங்கள் சுற்றப்பட்டுள்ள மயிலை வாகனமாக உடையவரே! நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், பகைத்து வந்த சூரபன்மன் முதலிய அகாசேசனைகளை அழித்துத் தண்டித்தருளிய திருநீனியாடலைப்பூரித்தவரே! நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், இனிய வொலையையுடைய தன்னை சதங்கைகளை யணிந்துள்ள திருவடிக்கமலங்களையுடையவரே! நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், தீரமும் சம்பிரமமும் வீரமுமுடையவரே! மலைகளுக்கு நாயகரே! ஞானதீயமாகத் திகழ்வவரே! அருள்வெளியில் ஆனந்தக்கூத்தாடுவவரே! நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், தெய்வயானையப்பாரா ஓர்பாகத்தில் கொண்டவரே! நமஸ்காரம் நமஸ்காரம், அடியேனுக்குத் தேவாரீருடைய திருவருள் தந்தருளீர்.

நாது விந்து கலாகீ:--

இவ்வாறு சந்தி அனலிப்பபடாத துணியையும் ஆற்றலும் வாய்ந்தவரின், அஃது இவ்வுலகங்களுக்கு முதலான அசுத்தம்

மாயைபய, நேரே சென்று பொருந்தி இயக்குமாயின், அவ்வசத்தார்  
மாயை, அச்சத்திவின் வேகத்தைத் தாங்காட்டாவாயின் இவ்வசத்தார்  
கங்கள் தோன்றாவாய்; அதுபற்றி அச்சத்தி தன்பொருளியப்பிள்  
ஒருவாற்றால் தன்னோடு ஒத்தும், பருப்பொருளியப்பிள் ஒருவாற்றால்  
அசத்தம் மாயையோடு ஒத்தும், நடுநிலையப் திரும்பு சத்தம் மாயை  
எனப்படும் விந்து சத்தியோடு நேரே பொருந்தி நின்றும், தனது  
வேகத்தை அதன்வாயிலாக அசத்தமாயை தாங்குமனவாக வைத்துத்  
தணிவுபடுத்திப், பின்னர் அவ்வசத்தம் மாயையை இயக்கி, இவ்வுலகங்  
களையும் இவ்வுலகத்துப் பப்பொருள்களையும் கோற்றுவிக்கும், எனவே  
சிவசத்தி நேரே சென்று இனையதுதிருமுடம் விந்து என்பது அறி  
யப்படுகிறது.

இனிச் சிவசத்தியால் உற்ப்பட்ட வீரதாமைய, சொல்வோலு இயக்கம் உடைத்தாய்ச்சுழல், அதன்கனிர்னும் ஒரு நாதம் உண்டாம்; அநாதம் அகத்தாலையியல் அனுபவீனத்திரட்டி உலகங்களைப் படைக்கும். சிவசத்தியால் இயக்கப்பட்ட வீரதாமைய இயங்குங்கால் வட்டவடிவும், அவ்வட்டவடிவின்னு தோன்றும் நாதம் விரிவடிவும் உடையவாம். இவ்வீரதாமையினுள் சோக்கையைத்தான், “உ” பின்னையாகியுமே முதல் உலகதோற்றத்திற்குக் காரணமென்பதைப் புலப்படுத்த முடவீல் ிட்டப்படுகின்றது. இதன் அறிஞரீயே சிவலிங்கமாமா,

இனிக் கலையென்பது ஐந்து வகையாகும்; அவை நிவீர்த்திகை, பிரதிட்டாகலை, வித்தாகலை, சாந்திகலை, சாந்தியந்திகை யென்பன. இவற்றுள்:—(1) நிவீர்த்தியென்பது: தன்கட்சோந்த பக்குவா கட்டுச் சங்கற்பங்களே விடுவீர்த்து மீட்டும்; அதுணல் நிவீர்த்தியென்பப் பெயர்பெற்றது; இதற்குத்தேவதை பிராமதேவர். (2) பிரதிட்டாகலை யென்பது: தன்னையடைந்த ஆன்மர்க்கட்கு முற்றொன்னை சங்கற்ப சிகர்பங்களே விஷேஷித்து நிறுத்தும்; இதற்குத் தேவதை திருமால். (3) வித்தியாகலை யென்பது: வித்தியா பென்பதற்கு அறிவு என்று பொருள்; தன்னையடைந்திருக்கும் ஆன்மாக்களின் அறிவைப் பிரகா





ஞானபண்டித ஸ்வாமி :-

முருகப்பெருமான் ஞானமூர்த்தி என்பதும், ஞான தாதா என்பதும், ஞானசாரியன் என்பதும், ஞான சொருபன் என்பதும் அடியிற்கண்ட பிரமீணங்களாவன.

“குருகூலை விளங்கு ஞானசுர குருநாதா”

• “குருகடாக்ஷ கலா வே தாகம

பரமவாக்சிய ஞானசாரிய

குறைவு தீர்த்துள் ஸ்வாமி”

—திருப்புகழ்

“ஞானந்தா னுருவாகிய நாயக நிலப்பை

யானு நீயுமா யிசைத்து மென்முலஃ தெளிதோ”

—கந்தபுராணம்.

வெகு கோடி நாம சம்பு :-

ஒரு நாமமுமில்லாத அப்பரமபதி, ஆன்மாக்களினப்பொருட்டு பற்பல் ஆயிரத் திருநாமங்களைத் தாங்கி யருள்புரிகின்றார்.

“ஒருநாம மோருருவ மொன்று மிலார்க் காயிரமார்  
திருநாமம் பாடிநார் தெள்ளேணங் கொட்டாமோ”

—திருவாசகம்.

“பேராயிரம் பாலி வாளு ரேத்தும்  
பெம்மாளை”

—அப்பர்.

கிரிராஜ :-

முருகக்கடவுள் குறிஞ்சிகிலங்கடவுளாதலால் மலைக்கு நாயகன் என்றார். “மலைக்கு நாயக” என்று திருக்கோணமலைத் திருப்புகழிலும் கூறியுள்ளார்.

தீபங்கள் ஜோதி :-

அருட்பெருஞ்ஜோதியாண்டவர் அறுமுகக்கடவுளே என்பதை பிறிதொரு பாடலிலும் விளக்குகின்றார்.

நிர்த்த லேக ஜோதிப் பெருமானே

—திருப்புகழ்.

தூய அம்பல லீலா :-

ஆன்மாக்களினது இடைய புண்டரீகத்திலுள்ள தகராகாபத்தில் சுகப்பெருமான் ஓவாது நடனம் புரிந்துகொண்டிருக்கின்றார். அவ்

விருதய வெளியை பாக்கியோமம், சித்தம்பாம், சிதாசாசம், தகராகாசம், சிற்றிப்பலம், ஞானம்பாம், அந்தாராகாசம், எனப் புஷ்பெயர்களால் சூருகிகளுரைக்கும்.

“அனோரணியார் மஹாதோ மஹியார் ஆத்மா

குஹாயாம் நிறுதிதோஸ்ய ஜந்தோ”

என்னும் மந்திரோப நிதத்தாலும் மேற்போந்த விஷயம் நன்கு வலியுறுத்தப்படுமாறு காண்க.

நதலும் . . . . . மறவாத :-

மனுநீதிச் சொழன் அரசுசெய்யும் பாக்கியத்தைப்பெற்ற சொழ மண்டலத்திலுள்ளோர், ஈகை, பூஜை, கல்வி, குணம், ஒழுக்கம், நீதி, கருணை, குருசேவை இவைகளுடன் கூடிய உத்தமர்கள் என்பதை மிகவும் அழகாகக் கூறுகின்றார்.

ராஜு கேம்பீர நாடு :-

ராஜகம்பீரநாடு என்பது வயலுனைச் சூழ்ந்துள்ள நாடு; வயலுனைச் சூழ்ந்துள்ள அந்நாட்டில் சாசனங்கள் எழுதும்போது ராஜு கேம்பீரநாடு என எழுதுவதை இக்காலத்திலும் காணலாம்.

ஆதரம்பயில் . . . . . சேரர் :-

சேரமான் பெருமான் நாயனார் உலாப்பாடிய வரலாறு.

மலைநாட்டிலே மகோதையென்னும் பெயரையுடைய கொடுங்கோனானிலே, சேரர் குடியிலே, பெருமாக்கோதையார் என்னும் சர்புத்திரர் ஒருவர் தோன்றினார். அவர் இளமையிலேயே வைபாக்கியமுற்று சிவபக்தி மிகுந்து, இராஜ கருமத்தை வெறுத்து, திருவஞ்சைக்களத்திலே திருவாயத்தொண்டினை அன்புடன் செய்வாராயினார்.

அக்காலத்திலே செங்கோற் பொறையன் என்னும் சேர மகாராஜன் துறவறத்தை மேற்கொண்டு, தவவனம் அடைந்தான். மந்திரி மாகள் திருவஞ்சைக்களம் போந்து, பெருமாக்கோதையாரை வணங்கி, அரசாகும்படி வேண்டி, அவர் சிவாக்களு மேற்கொண்டு கழறினவற்றை யறிவும் அறிவையும், அழிவினவாத ஆற்றலையும், பெருங்கொடையையும், பற்பல படைகளையும், பக்திநெறி வழுவாமல் அரசியற்றும் ஆண்மையையும் சிவபெருமான் பால் பெற்று வணங்கி

விடைபெற்று, நல்ல சுபதினத்திலே முடிசூடி, சிவாலயத்தைவணங்கி யானின்தீர்ந்து வெண்கொற்றற்க்குடைநீழ்மற்ற, வெண்சாமரமிரட்டி, சகல விருதுகளுந்-லும் பவனிவருப்போது, ஒரு வண்ணன் உவரமன் னைச் சுமந்தவர, மழையினிலே கரைந்த உவரமன் அவ்வண்ணு னுட்பட்டில் விழுதிடேயல் தோன்ற; அதுகண்ட பொருமாக்கேகதைபார் என்னும் சோமான்பெருமானாயனார், உடனே யானேயினின் மூரிங்கி விரைந்துபோய் வணங்கினார். அதுகண்ட வண்ணன் நடுங்கி, அவரை அடிவணங்கி, “அண்ணலே! “அடியேன் அடிவண்ணன்” என்று சொல்ல; சோமான்பெருமனையானும் “தேவரீர் திருநீற்று வடிவத்தை நனைப்பித்தீர்; அடியேன் அடிச்சோன் வழுந்தாதீர்போய்” என்று சொல்லியருளினார். அவருடைய அடியார் பத்தியைக்கண்ட மந்திரிமாரகள் முதலியோர், மிகவும் இருப்பூதூற்று இறைஞ்சினார்கள். சோமான்பெருமான் நாயனார் நான்தோறும் செப்பும் பூசைமுடிவிலே நடராஜப்பெருமானுடைய சிலர்பொலி கேட்கும். அடியாருக்கும் மிடியாருக்கும் பொன்னாமி பொழிந்துவருவார். சிவபெருமான் கொடுத்தனுப்பிய திருமுகப்பாசாததை சென்னிமேற்கொண்டு வணங்கி, அத்திருமுகங்கொண்டு வந்த பாணத்திராருக்கு அன்பில்லாத அரசனங் களை நகி உபசரித்தார்.

ஒருநாள் பூதூந்தரத்திலே, சபாநாதருடைய சிலர்பொலிகேளா தெழிய; சோமான்பெருமான் நாயனார் மனமங்கி, அடியேன் யாதுபிழை செய்தேதே? இனி இந்த உடம்பை ஒழிப்பேன்” என்று வாங்கொண்டு உயிரிவிட்டதுமீயும்போது, உடனே சபாநாயகர் சிலம் பொலிகேட்கச் செய்து “அன்பே! சந்தரமூர்த்தியின் பாடலைக் கேட்டு வரத்தாழ்த்தோம்” என்று சந்தரமூர்த்தி சுவாமிகளுடைய பெருமையை வெளிப்படுத்தினார் சோமான்பெருமான் நாயனார் சந்தரமூர்த்திசுவாமிகளுடைய பெருமையையும், அவர் அருட்பாட லின் அருமையையும், கனகசபாபதி அடியார்க்குநரும் கருணையின் திறத்தையும் நனைந்து நனைந்து நெஞ்சம் நெகிழ்ந்து, சந்தரமூர்த்தி சுவாமிகளை தெரிசிக்கும் ஆவல்கொண்டு, திருவானூர் போந்து வன் றெண்டரை வணங்கி, வன்மீகரதர்மீது மும்மணிக்கேவலையையும், சபாநாதர்மீது பொன்வண்ணத்தந்தரதியையும், வேதாரணியர்மீது திருவந்தாரதியையும் பாடி வழிபட்டார்.

பலநாட்களுக்குப் பின் சந்தரமூர்த்திசுவாமிகளை தம்முடைய கொடுங்கோலுருக்கு அழைத்துச்சென்று, மிகவும் உபசரித்து அவரு

டன் மிக்கதோர் நட்புகொண்டு, தமது பண்டாரத்திருந்த செல்வமுழுவதையும் கொடுத்து அருளுக்கு அனுப்பினார்; அவரை பிறவாது அரசு செய்து வந்தார். பின்னர் ஒரு சமயம், அந்திவண்ணனைத் துது கொண்ட சுந்தரமூர்த்திராயனார். கொடுங்கோலுருக்கு வந்து சோ மான் பெருமான் நாயனார் எழுந்தருளியிருந்தார். பலநாளாயின் பின் சந்தரமூர்த்தி நாயனார் திருவஞ்சைக்களஞ்சென்று சுவாமிதரி சனஞ்செய்துகொண்டு இருந்தபோது, திருக்கலையத்தினின் மும் சிவபெருமானால் அனுப்பப்பட்ட வெள்ளையரின்மேல் ஏறி, “இந்தி ரன் மால் மியன் எழிவார் மிகுதவர் எல்லாரும் வந்து எதிர் கொள்ள”ச் செல்லுப்போது, தனது அருமைத்தோழராகிய சோமான் பெருமான் நாயனரை நனைத்தார். நீராடிக்கொண்டிருந்த சோமான் பெருமான் நாயனார், தம்பிரான் தோழருடைய நினைவையுணர்ந்து உடனே அருகிலேநின்ற குதிரையீது ஏறி, திருவஞ்சைக்களஞ் சென்று, ஐராவணமூர்த்து ஆகாயத்திற் செல்லும் ஆரூடிகளைக்கண்டு தாம் ஏறிய குதிரையின் செகியிலே ஐந்தெழுத்தை ஒதியருளினார். உடனே அக்குதிரை ஆகாயத்திற் பாய்ந்து, நப்பிராருருடைய வெள்ளையரையடைந்து அதனை வலஞ்செய்து அதற்குமுன்னால்கச் சென்றது. சோமான்பெருமான் நாயனருடைய படைவீரர்கள், குதிரையேற்றசெல்லும் அந்நாயனரைத் தங்கள் கண்ணுக்குப் பின்பும் எல்லைவரைக்கும் ஆகாயத்திலே கண்டு, பின் காலையாயால் மிகுந்த திடப்பத்தியால் உடைவாங்கொண்டு தங்கள் உடம்பவலிழ்தி வீரபாக்கையைப் பெற்றுப்போய், சோமான்பெருமான் நாயனருக்கு முற்பட்டு, அவரை வணங்கிக்கொண்டு சென்றார்கள். சோமான்பெரு மான் நாயனாரும், சந்தரமூர்த்தி நாயனாரும், உள்ளவர் விளைபகற் றும் வெள்ளியம் பொருப்பை நண்ணியவுடனே, குதிரையினின் மும் யானையினின் மும் இறங்கி, பலவாழிச்சேயும் கடந்து, திருவண்ணுக்கன் திருவாயிலையடைந்தார்கள். அங்கே சோமான்பெருமான் நாயனார் தடைப்பட்டு நிற்க; சந்தரமூர்த்தி நாயனார் உள்ளேபோய் சிவசகந்தி யில் நிலத்தில் வீழ்ந்துவணங்கி எழுந்து துதித்துநின்று, “எந்தையே! தேவரீருடைய திருவடிகளை அடையுப்பொருட்டுச் சோர்கோன் திரு வணுக்கன் திருவாயிலையடைந்து நிற்கின்றார்” என்று விண்ணப்பஞ் செய்தார். புரிசடைக்கடவுள் புன்றமுதவல்செய்து சோமான்பெரு மானை அழைப்பிக்க; அவர் ஆராத அன்புடன் விரைந்துசென்று பன் முறை வீழ்ந்து வணங்கித் துதித்துநின்றார். செம்மேனியப்பெயர்மான்

திருமுறவல்கொண்டு “இக்கே நாம் உன்னை அழையாதிருக்க; நீ வந்தது என்னை? என்று அருளிச்செய்ய; சேரமான்பெருமான் நாயனார், கைகடப்பி “பண்ணவார்போற்றுங் கண்ணுதற்கடவுளே! சுந்தரமூர்த்தி நாயனருடைய திருவடிகளைத் துதித்து; அவர் ஏறிய வெள்ளையானைக்குமுன் அவரைச் சேகரித்துக்கொண்டுவந்தேன்; தேவரீர் பொழிகின்ற பெருங்கருணைவெள்ளம் அடியேனை இங்குகொண்டுவந்து ஒதுக்கியதால் திருமுன்வாப்பெற்றேன்; மலைமகள் நாயக! இனி ஒரு விண்ணப்பம் உண்டு; மாலயபுத்தி வானவாகளாகலும் மாதவர்களாகலும் மறைகளாகலும் துதிக்கப்படுதெற்கு அரிய பெருமையுடைய தேவரீர் மீது அன்பிலுலே தேவரீரது திருவருள் துணைகொண்டு திருவொப்ப பாடியேன்; அதனைத் தேவரீர் திருச்செவி சாத்தியருள வேண்டும்” என்று விண்ணப்பஞ் செய்தார். அப்பொழுது சிவபெருமான் “சேரனே! அதனைச்சொல்லு” என்று திருவாப்பமலர்ந்தருள; சேரமான்பெருமான் நாயனார் உடனே திருக்கைகலாச ருளவாலவை ஆக கவிபாகப் பாடிப் பெருமானைக் கேட்பித்தார். அரனார் மகிழ்ந்து அருள்செய்து; “நம்முடைய கணங்களுக்கு நாதலுய் இந்” என்று அருள்புரிந்தார். “சேரமான்பெருமான் நாயனார் சிலகணநாதாகிச் சிவமூர்த்தியைச் சேகரிப்பாராயினார். அவர் அருளிச்செய்த ருளவலையை அங்கு அன்று கேட்ட மகாசாத்தர், தமிழ் நாட்டிலேயுள்ள திருப்பிடவூரிலே அதனைக்கொணர்ந்து வெளியிட்டு, உலகில் கிளங்க நாட்டியருளினார்.

### கருத்துரை.

மேன்மை பொருத்திய சோழமண்டலத்திலுள்ள ராஜகெட்பீர் நாட்டிற்கரசே! வயநூரா! சேரநாட்டிலுள்ள பழகியில் வாழும் பரமபதியே! தேவரீருக்குப் பலப்பல நமஸ்காரம்; அருள்புகிர்.

### உபதேசம். +

எல்லா வயிர்க்கும் இறைவனுடைய கோயில்களே; உயிர்க்கள்தோறும் இறைவன் உயிர்க்குயிராய் இருந்து திருநடனம்புரிகின்றார்; ஆதலால், எல்லா வயிர்களிடத்திலும் அன்பாய்கு; உயிர்களிடத்தில் செய்யும் அன்பு இறைவனைச் சாரும்; உயிர்களை நேசிப்பது இறைவனை நேசிப்பதாகும்; இறைவனை நேசித்த உயிர்களே வெறுத்தால் (கொன்றால்) இறைவனருளைப்பெற முடியாது; “படிப்பது தேவாரம் இடிப்பது சிவன்கோயில்” என்ற வசனத்தை உன்னுட்க. உயிர்களின் தன்மத்தை நீக்க உன்னுயிரைத் துருப்பாக எண்ணு; இதுதான் மோக உலகத்திற்குச் சிறந்த வழி.

ஓம் ஸாப்ரஹ்மன்யாய நம:

## ॥ शिवानन्दलहरी ॥

சிவானந்த லஹரீ  
(ஆதிசங்கர் அருளிச் செய்தது)

(108-வது பக்கத் தொடர்ச்சி)

असारे संसारे निजमजदूरे जडधिया  
अमर्तं मामन्धं परमरूपया पवुसुचितम् ।  
मदन्यः को दीनस्त्व कृपणरक्षानिनिपुण-  
स्त्वदन्यः को वा मे त्रिजगति शरण्यः पशुपते ॥ १३ ॥

(13) அஸாரே ஸம்ஸாரே நிஜபஜன தூரே ஜடத்தியா  
பரமந்தம் மாமந்தம் பரமக்ரூபயா பாதுமுசிதம் ।  
மதன்ய: கோ தீனஸ்தவ க்ரூபணரக்ஷாநி நிபுண-  
ஸ்க்வதன்ய: கோ வா மே த்ரிஜகதி சரண்ய: பசுபதே॥

### பதவுரை.

பசுபதே	- ஆண்மர்களுக்குப் உசிதம் பதியே.	- தகும், - எரிவண், - அடியேனை விட- வேறு எவன், - தேவரீருக்கு, - இருக்கின்றான், க்ரூபணரக்ஷாநி நிபுண;
அஸாரே	- ஸாரமற்றதாயும், நிஜபஜன தூர்	- தவ க:
நிஜபஜன தூர்	- தியானத்திற்கு வெகு தூரமாயுமி ருக்கின்ற,	- எழுக்கின்றான், - எழுக்களைக் காப்பாற்றுவதில் மிகவும் வல்லமை பொருத்திய, - தேவரீரவிடவேறு, - அடியேனாக்ரு, - அண்டினவர்களைச் காக்கும் சக்தி யுடையவனாக, - மூலவகங்களிலும், - யார்தா னிருக்கின்றார்,
மம்ஸாரே	- பிறப்பிறப்பாகிய ஸம்ஸாரத்திலே, - ஈனமை தீமையறி யாதமந்தப்பதியால், - சமூல்கின்ற உலையும், - குருடையுமிருக் கின்ற,	
ஜடதியா	- அடியேனை, - தேவரீருடைய மேலான கருணையால், - காப்பாற்ற,	
பரமந்தம்		
அந்தம்		
மாம்		
பரமக்ரூபயா		
பாதம்		

## பொழிப்புரை.

ஒ பசுபதே! தேவரிருடைய புகழைத் துதிப்பதைப்பொழிந்து, சாராயற்ற சமுசாரத்திலே கிடந்துழும், அறிவற்றவனாகிய அடியேனைக் கருணையுடன் காப்பாற்றுதல் உகிதமாகும்; அடியேனைக்காட்டி நாம் எளியவர்கள் உலகில் வேறு யாருளர்? தேவரினாலிட எளியவர்களைக் காக்கவல்லவர் முன்னுலகங்களில் வேறு ஒருவருமிலையல்லவா?

“வம்பனே தன்னை யான்ட மாணியே

மற்றுதான் பற்றிலென் கண்டாயி”

“மற்றுப் பற்றெனக் கின்றிநின்றிப் பாதமே மனம் பாலிந்தேன்”

“என்றனாகி நூற்றுனை உன்யானற்றி லெறுமிலீலை”

“உன்றனக்கே பாயும் என்றனக்கார் துணைவர்”

என்ற தமிழ் வேதங்களை இதனோடு இணைத்து நோக்குக.

प्रभुस्त्वं दीनानां खलु परमबन्धुः पशुपते

प्रभुख्योऽहं तेनासि किमुत बन्धुत्वमनयोः ।

त्वयैव क्षन्तव्याः शिव मदपराधाश्च सकलाः

प्रयत्नाक्तव्यं मद्वनमियं बन्धुसुरणिः ॥ १४ ॥

(14) ப்ரபுஸ்த்வம் தீனாநம் கலு பரமபந்த: பசுபதே

ப்ரபுக்ஸ்யோ ஸஹம் தேஹாயமி கிமுத பந்துவமனயோ: ।

த்வமயவ க்ஷந்த்வயா: சிவ மதபராதாச்ச ஸகலா:

ப்ரயபந்தாத் கர்த்த்வயம் மதவனமியம் பந்து ஸரணி: ॥

## பதவுரை.

பசுபதே	- சர்வேச !	அஹம்	- அடியேன்,
ப்ரபு:	- எல்லாம் செய்ய வல்	ப்ரபுஸ்ய:	- மிக்க முத்தன்மை (ஆதலால்),
த்வம்	- தேவரீர்,	அநயோ:	- இந்த கம்பிருவர்களுக்கு
தீனாம்	- எளியவர்களுக்கு,	பந்துவம்	- உறவின் தன்மையை,
பரமபந்த:கலு-	முக்கியமான உறவினரல்லவா?	கிமுதா	- சொல்லுவண்டிய
தேவநாமி	- அந்த எளியோர்களுக்கு	சிவ	- மக்களடாரே !

குன்றும்;

## கிவானந்த ஹரீ

ஸகலா:	- எல்லா விதங்களான,	ப்ரபுஸ்தா:	- முயற்சி பெடுத்தல்
மதபராதா:	- அடியேனுடைய குற்றங்களும்,	த்வமயவ	- உம்மாலேயே,
க்ஷந்த்வய:	- பொறுத்துக்கொள்	அநயோ:	- உறவுடையவர்கள்,
மதவனம்	- அடியேனைத் காப்பாற்றுகலும்		

## பொழிப்புரை.

ஒ பசுபதே! சிவபெருமானே! எல்லாம் வல்ல சித்தான தேவரீர் தினர்களுக்குச் சிறந்த பந்துவல்லவா? அந்தத் தினர்களில் அடியேன் முதல்வனாகியேன், நமக்கு வேறு உறவைச் சொல்லவேண்டிய தில்லையல்லவா? ஆகலின், அடியேன் செய்த எல்லாக் குற்றங்களை யும் பொறுத்து அடியேனைக் காத்தருளல் தேவரீருக்குக் கடமையாகும்; இதுவே பந்துக்கள் செய்யும் வகை.

“ஏகைந்நிவந்திந் பெருமானே”

“எல்லாம் பிறையுந் பெறுத்தநுள்வாய் சக்சிபேகம்பனே”

उपेक्षा नो चेत्किं न हरसि भवख्यानविभुषां

शिरस्यैकैधात्रं ननखलु सुवृत्तं पशुपते

कथं वा नित्यं करनखमुलेनैव लुलितम् ॥ १५ ॥

(15) உபேக்ஷா கோசேத்கம் ந ஹாஸி பவத்த்யான விமுகாம்

ஆராசாபூபிஷ்டாம் விந்நி விபிமசக்சேதோ யதி பவான் ।

கிரஸ்தந்த்வைதாத்ராம் நககலு ஸுவ்ருத்தம் பசுபதே

கதம் வா நிர்யத்தம் கரக முகேகவை லுலிதம் ॥

## பதவுரை.

பசுபதே	- சர்வேச,	கோசேத்	- இல்லாநிநுத்தால்,
உபேக்ஷா	- அடியேனைக் காக்கும் விஷயத்தில்	தூராசாபூபிஷ்டாம்	- கெட்ட ஆசையால் கிறைந்தாயும்,

பலயான விழாகம் - தேவர்குடைய சியன்தி விரு ந்து வேரசுவரி ருக்கின்ற, - பிரமனுடைய - என், - போக்கழக்கின்ற யில்லை, (அழிக்கி ன்றயில்லை); - தேவரீர், - அப்படி அழிக்கச் சத்தியம்வராயி ருந்தால்,	- நகத்திலுக்கின்னக் கூடாததாயும், - மிகக் கடினமாக வுழிருக்கின்ற, - அந்த, - பிரமனுடைய, - தலையானது, - முயற்சியின்றி, - எவ்விதமாகத் தான், - ராகமுக்கேவலை - கைக்கீன் துனி யிலுளேயே, - கின்னப்பட்டது, லுவிதம்
---	--

### பொழிப்புரை.

ஓ பசுபதே! என்னை காத்திருள்வதில் தேவர்களுக்கு வெறுப்பு இல்லாமலிருந்தால், தேவரீரது திருவுடித்தாபரையை நினைக்காட்கிடாத அடியேனுடைய தலையெழுத்தை என் அழிக்கவில்லை? அவ்வாறு அழிக்க உமக்கு ஆற்றலில்லையோ? கின்னமுடியாத தின்னையுடைய அந்த அயனுடைய தலையை நகுதுனியால் முயற்சியின்றி கின்னியெறியவில்லையோ? ஆற்றலில்லையென்று எப்படி சொல்லலாம்?

நல்ல மலரின்மேல் நான் புகலித் தலை  
ஒல்லையறிந்த தென் றுநீர்புற  
உகிரா லறிந்த தென்றுநீர்புற

—திருவாசகம்.

(தொடரும்.)

இரை தேவதோடு இறையையுந்தேடு.

—பாரம்பரங்கள்.

தும் குறைய எம்:

## கந்தர் திருவிளையாடல்

(114-வது பக்கத் தொடர்ச்சி)

முழுதொருங்குணர்ந்த முருகப்பெருமான் தமது சாரதியாகிய வாயுதேவனை நோக்கி, “மனதிலும் விரைந்து செல்லுமவன்ணம் தேவைச் செலுத்துவாயாக” என்று பணித்தருள, வாயுதேவன் “நன்று” என்று வணங்கி, தன்னினமாகிய வாயுக்கள் புடைசெல்ல, குதிரைகளைத்தூண்டி ஆர்த்தான். அப்பொழுது விண்ணும் மண்ணும், மலைகளும், கடல்களும் நிலைசுக்கிரமும் நடுங்கின; குமரக்கடவுளுடைய தேர் இவ்வாறு ஆகாபயார்க்கமாகச் சென்றது; பூதசேனைகள் அவரைச் சூழ்ந்து சென்றன; போரிலே தோற்றேறிய பூதர்கள் எல்லோரும் முருகக்கடவுளைத் தரிசித்தவுடனே வணங்கிக்கொண்டு ஆற்றலோடும் அவரைச் சூழ்ந்துசென்றார்கள்; பற்பல வாத்தியங்கள் முழங்கின; கின்னிடையிருந்த வானவர்கள் மகிழ்ந்தார்கள்; இவ்வாறு எப்பெருமான் தாரகனுடைய அரக்கனாதையடைந்தார். பூதர்களும் அசுரர்களும் பொருதார்கள்; பூதர்களால் அசுரர் பலர் மாண்டனர்; மற்றவர்கள் அனைவரும் வலியற்றுத் தோற்று ஒடினார்கள்.

தராகன் தன் சேனைகள் தோல்விபடைந்தமையை நோக்கி, வில்லை வளைத்து பல பாணங்களைத் தொடுத்தாக்கொண்டு நடந்து, தன் லோடெடதிர்த்த கணநாதர்கள் எல்லாரையும் பலபாணங்களைச்சொரிந்து தூர்த்துகொண்டு, அம்பிகை தந்த அதுமுகவள்ளலின் திருமுன் அடைந்தான். அடைந்தவுடனே சிந்தையின் கண்ணே சினமென்னுந் தீமுனத் தூதர்களை நோக்கி, “இவன்ருளே சிவனுடைய குமாரன்?” என்று வினாவு, தூதர்கள் “ஆம் அரசனே” என்றார்கள். உடனே நீதிநெறியற்ற தராகன், தேரை விரைந்து செலுத்திக் கொண்டு, குமராகவாரி திருமுன்சென்று பூரணசந்திரையொத்த ஆறு திருமுகங்களையும், அருளொழுகும் பன்னிரண்டு திருக்கண்களையும், வேராயுத்தையும், எனிய படைக்கலங்களையும், பன்னிரண்டு திருக்கங்களையும், அழகிய நவரத்தினத்தண்டை ஒலிக்கும் திருவடித் தாமரைகளையும் கண்டான்.

முழுநீ யல்ந வானு முகங்களு முன்னின் காலும்  
விழியனி னரெனூர் லெலும் வேறுள படைவின் கீரம்  
அழகிய கயர் ஈறு மணிமணித் தன்னடை யார்க்குநீ  
செழுநல ரடியுங் கண்டா னவன்தவனீ செப்பற் பற்றே.

தாரகன் இவ்வாறு சிற்பரமூர்த்தியாகிய செவ்வேட்பெருமானு  
டைய; திருநெருவினைத்தையும் நோக்கி, அற்புதமடைந்து, “இவன்  
நம்மேலே போர்செய்ய வந்தான் என்றால் கற்பனைகடந்த ஆதிக்கட-  
வுளே போலும்” என்று தனக்குள்ளே சொல்லி, யாவார்க்கும் முதல்  
வராகிய சிவமூர்த்தி தமக்குத் தந்த வரத்தையும், வீரத்தையும், வன்  
மையையும், அவற்ற செல்வத்தையும், நினைந்து பெருநிதிமுற்றுக  
கோபித்து, குமாரக்கடவுளை நோக்கி, “பாலனே! கேள்; நாரணன்  
நான்முகன் இந்திரன் முதலிய இலாபயவசே எமக்குப் பகைவர்; சிவ  
பெருமான் எமக்குப் பகைவா்வர்; ஆதலால், நீ போர்செய்யவந்த  
காரணம்பாது? சொல்லுதி” என்றான். முருக்ககடவுள் “தாரகனே!  
உயிர்கள்செய்யும் நல்லினை தினைகளுக்கேற்ப, அருளும் தண்டமும்  
செய்யும் முழுமுதற்கடவுளாகிய முக்கட்பெருமான் தேவர்களை நீங்  
கள் கிறையிலிவைத்தமையைத் திருவுளங்கொண்டு, உங்கள் வீரத்தை  
யும் வலியையும் அழிக்குப்பொருட்டு நம்மை விடுத்தருளினார்” என்று  
திருவாய்மொழிந்தார். தாரகன், “கருடனீதுவந்து என்னை எதிர்த்துப்  
பொருத திருமாலினுடைய சக்கரப்படை என் கழுத்தில் ஆபரணமா  
யிருத்தலை நீ பார்க்கவில்லையோலும்? இன்றவரை எம்மோடு பகைத்  
தவர்களில் எம்மை வென்றவர் ஒருவருமில்லை; எவ்வாரும் இறந்தும்  
தோற்றும் ஒழிந்தார்கள்; நீ எனமீது போர்செய்ய விடுத்த தலைவர்  
களை வென்று கடுளஞ்ச மலையினுள் மாளுபவண்ணம் செய்பதன்,  
பிள்ளாப்! நீ என்னுடன் போர்செய்து வருந்தாது நின் கந்தையாகிய  
அத்திவண்ணன்பால் போய்விடு” என்றான்.

அதுமுக்ககடவுள், “தாரகனே! ததிசிமுனிவன்மீது விட்டுணு  
விடுத்த அச்சக்காரம் கூழிழந்து குயவன்கைச் சக்கரப்போலாயினதை  
நீ கேட்டிலையோ? படைக்கல நாயகமாகிய வேற்படை அதுபோல்  
பழியுறமோ? உன்னுமியையும் ஒரு கணத்தினுள்ளும்; சூரியனைக்  
கண்ட இருன்போல் நம்வரவால் உங்கள் வன்மை ஓரிமைப்பின் மாய்ந்  
தது. கன்வனே! மாவயக்கு இருப்பிடமாகிய கிரௌஞ்சுவெற்றையும்  
உன்னையும் வேற்படையால் கொன்று, நமது சேனையை விரைவில்  
மீட்கின்றேம்.” என்று மொழிந்தருளினார்.

உடனே தாரகன் கோபங்கொண்டு வில்லைவளைத்து நாடுனாவி  
செய்ய, தேவர்களும் தியக்கமுற்றார்கள். அப்பொழுது ஆழமுக்கப்  
பெருமான் தமது திருக்காத்திருந்த வில்லைவளைத்து நாடுனாவிசெய்  
தார். அதுகேட்டு அபுளரி முதலியோரும் அஞ்சினார்கள்; உலக  
மெல்லாமெங்கின; தாரகனும் தலைபடைசத்தான்; அசுரப்படைகள்  
அஞ்சின; தாரகன் அளப்பில்லாத அப்புகளைத்துண்ட, அழமுக்கச்  
சிவனார் ஆயிரம் பாணங்களைத்துண்ட அவற்றைத்துணித்தார். தார  
கன் கினந்து பின்னும் ஆயிரங்களைகளைத்துண்ட, பரசிவகுரு பத்தக்  
கணைகளால் அவற்றை மாற்றினார். தாரகன் மீளவும் கணைகளை வில்  
லிப்பூட்ட, கந்தவேள் ஒரு கணையைவிடுத்து அவன் வில்லைத் துணித்  
தார்; தாரகன் வேறொரு வில்லைவிளக்க, முருகவேள் ஆயிரம்பாணங்  
களைத் தாரகன்மீது விட்டார்; தாரகன் அவைகளை ஆயிரங்கணை  
ளால் நீக்கினான். தாரகன் கணக்கில்லாத கணைகளைத்துண்ட, குமார  
மூர்த்தி அவைகளை மாற்றி, கோடி பாணங்களைபேயி அவன் உடம்பு  
முழுவதும் துணித்தார்; தாரகன் கோபித்து இரண்டு கோடி பாணங்  
களை பெருமான்மீது விடுக்க, செவ்வேட்பெருமான் இரண்டு திவ்வி  
யாத்திரிங்களைச் செலுத்தி தாரகனுடைய துர்பிக்கையையும் முகத்  
தினுள்ள கொம்பையும் துண்டமாக்கினார்; அதனால் தாரகன் மனந்  
தளர்ந்து, நரணமும் மாணமுமடைந்து, பெருங்கோபமுற்ற, ஆயிரம்  
பாணங்களைபேயி ஆறுமுகப்பெருமானுடைய தேரினுள்ள கொடியை  
யறுத்தவீழ்த்தினான்; அதுகண்ட அறுமுகவள்ளல் எட்டுக்கணைகளைச்  
செலுத்தி தாரகனுடைய வில்லையறுத்து, ஆயிரம் அக்கணைக்களை  
களைச்செலுத்தி அவனுடைய தேரையும் பாக்கையும் தேர்க்குதிரை  
களையும் அறுத்துப் பாழ்படுத்தினார். தாரகன் வேறொரு தேரிலேறி  
லுந்து அறு கணைகளைவிடுத்து முருகவேளுடைய தோற்பாகனாகிய  
வாயுதேவன் புபத்தைப் புண்படுத்தினான்; அதனால் வாயுதேவன் வருந்  
தியடைக்கண்ட வயுவேலண்ணல் ஆயிரங்கணைகளைச்செலுத்தி தாச  
கன் நெற்றியைத்துணித்தார்; தாரகன் ஓடுவென்று புலம்பி உதிராவென்  
ளஞ்செரிய தேரினமீது மயங்கி மூர்ச்சித்து கிழந்தான்.

தங்கள் தலைவனாகிய தாரகன் மயங்கிவிழுந்ததைக்கண்ட அசுர  
சேனைகள் கோபித்து, சிவகுமாராகிய செவ்வேட்பெருமானைச்  
குழிந்தொண்டார்கள்; குழிந்து, குலம், சக்கரம், தோமரம், பிண்ட  
பாலம், வேல், வாள், தண்டுமுதலிய படைக்கலங்களை மழைபோல்  
பொழிந்தார்கள். குமாரசுவாமி அதுகண்டு, தம்வில்லை வளைத்து சர



மறை பொழிந்து, அவனர்களுடைய தலைகளையும், மார்புகளையும், காங்கிலையும், கோள்களையும், தான்களையும் துணித்தார்; இரத்தவெள்ளம் கடல்போல் பெருகிறது; அசுரர்கள் பலர் மடிந்தார்கள்; சிலர் இரத்தக்கடலிலே முழுதி நீந்தி, தத்தமுயிர்கொண்டு ஓடி ஒளிந்தார்கள்.

அப்பொழுது தாரகன் மயக்கம் நீங்கி எழுந்து, தன்னருகிலே நின்ற தனது சேனைகளைக் காணுது, தன்பங்கொண்டு நகைத்து, “சிலசுமாரன் ஒருவன் போர்செய்து, நான் எனது புலமழக்கையை யும் கோடுகளையும் இழந்து, மயங்கிக் கிழந்தேன்; என் சேனையையும் இழந்தேன்; தனித்து நிற்கின்றேன்; என் ஆண்மை அழகது; அழகது; விவன்மை கணக்கற்ற கணைகளைத் துண்டி இச்சிறுவனைக் கொல்வதம் வெவ்வதம் அரிது; இனி தேவப்படைகளைச் செலுத்திப் போர்செய்வேன்” என்று சிந்தித்தான். சிந்தித்து, நாராயணப் படை, பிரம்பப்படை முதலிய தெய்வப்படைக்கலங்களைவிடவிட அவை பெல்லாம் வந்துவந்து, அஞ்சி நடுங்கி, எப்பெருமான் பக்கத்தே ஒதுங்கித்து சித்துக்கொண்டு நின்றன. அதுகண்டு தாரகன் செருக்கற்று அஞ்சினான்; மிக்க அற்புதமடைந்தான்; தீப்போர்கள் சிந்தும் கண்களை யுடையவனாகி, “இவனை வெல்லுவது அரிது” என்று எண்ணி, “இனி பசுபதிபந்திரத்தை விடக்கடவேன்” என்று நினைத்து அத்திருப்படையை எடுத்து, மனத்தாற்புகித்து கோபத்தோடு செலுத்தினான்; அச்சிவப்படைக்கலம், வீடத்தையும், தேவப்படைக்கலங்களையும், பூசங்களையும், பாப்புகளையும், குலங்களையும், அக்கினியையும் உண்டாக்கிக்கொண்டு சருவாண்டங்களும் சகல உயிர்களும் உலீந்து சுழலும்வண்ணம் உருத்துச்சென்றது. குகப்பெருமான் அதுகண்டு, தந்தையாராகிய சந்திரகுமரையை நியானித்துக்கொண்டு, ஒரு திருக்காத்தைக் கீட்டி தந்தவன் வாங்குவதுபோல் அச்சிவப்படைக்கலத்தைப் பற்றிக்கொண்டார். தாரகன் அதுகண்டு “இன்றே எம் செல்வம் அழிந்தது” என்று ஏங்கினான்; “தேவ தேவராகிய சிவபெருமானுடைய படைக்கலத்தையே இவன் பற்றினான் எனில் இவனை யாரால் வெல்லமுடியும்? இவனாற்றல் அனலிடற்பாலதே? இவன் அறப்போரன்றி மார்ப்போர் செய்யான்; நான் மாயைகளைச் செய்து மறைந்துநின்று போர்செய்வேன்” என்று எண்ணி கிரைந்து கிரொளஞ்சமையின் முன்சென்று “நீ வல்ல மாயைகளை கிரைந்துசெய்வாய் செய்வாய்” என்று கூறினான். உடனே கிரொளஞ்சமையே முப்பிரங்கள் பலவாய்வர, தாரகன் அப்பிரங்களி

லுள்ள அசுரர்களாய் வந்தான். கிரொளஞ்சமையே பலபல மேகங்களாய் வர, தாரகன் அவற்றினுள்ளே இடியாய்வந்தான்; கிரொளஞ்சமையே பல கடல்களாய்வர, தாரகன் அவற்றினுள்ளே வடவாழகாக்கினியாய் வந்தான்; கிரொளஞ்சமையே, சகலவான்கினியைச்சூழும் இருளாய் வர, தாரகன் அதனுள்ளே பூதர்களாய் வந்தான்; கிரொளஞ்சமையே எட்டி திக்கயங்களாய்வர, தாரகன் குலமிகளளாய் சடசடவென்ற ஒலியோடுவந்தான்; கிரொளஞ்சமையே வாயுவாய்வர, தாரகன் அக்கினியாய் வந்தான்; கிரொளஞ்சமையே நெருப்புக்கொள்ளிகளாய் ஆகாயத்து வர, தாரகன் ஆயிரங்கோடி சூரியர்களாய் வந்தான்.

இவ்வாறு தாரகன் கிரொளஞ்சுகிரியோடு அளகிலவர தமையை களைச்செய்துகொண்டு எங்கும் திரிதலும், அதுமுக்கடவுள் இவற்றைக்கண்டு, தமது திருக்கரத்தினுள்ள வேலாயுத்தை நோக்கி, நீ தாரகனையும் கிரொளஞ்சமையையும், ஒரு கணப்பொழுதில் பிளந்து, உயிருண்டு, இலக்கத்தொன்பான் வீரர்களையும் பூசசேனாதிபதிகளையும் மீட்டுக்கொண்டு இங்கு வருவாயாக” என்று பணித்து, அதனைச் செலுத்தினார். சர்வசங்கராகாலத்தில் மாயையாகிய உலகங்களையும் உயிர்களையும் சிவமூர்த்தியினது நெற்றிக்கண்ணினின்றும் தோன்றும் அக்கினி சுடுதல்போல, அவ்வேலாயுதம் தாரகனும் கிரொளஞ்சுகிரியும் அங்கே செய்த மாயைகள் அனைத்தையும் கிரைவித்தது; எப்பிரானுடைய ஆறு திருமுகங்களிலுமிருந்து எழுந்த கினம் திரண்டொரு வடிவெடுத்துச் செல்லல்போலவும், முக்கட்பெருமானுடைய முத்தலைக்குல பிரண்டும் ஒருபடையாய்ப் செல்லல்போலவும், அவ்வேற்படைச்சென்றது. தாரகன், “இதனை நான் பிடித்து முறித்து விடுவேன்” என்று கோபத்தோடு, அக்கினியிலையை எதிர்த்தவரும் கொசுவைப்போல் எதிர்த்து வந்தான். அவ்வாறுவந்த தாரகனுடைய மார்பாகிய வராமலையின்மேல் இடிபோய்ப்பட்டு வேற்படையானது அவன் மார்பைப்பிளந்து, கிரொளஞ்சமையையுந் தகர்த்துச்சென்று, மிகுந்த கெட்பிரத்தான் மீண்டு, மலையினுள்ளே தமிகின்ற வீரர்களுக்கு உணர்வைத் தந்து எழுப்பிக் கிடோ, ஆகாயத்திற் சென்று கங்கைகீராரடிப் பரிசுத்தவடிவாய், இளம்பூரணனது காமலரிவ்வந்து முன்போல் இருந்தது. வேலாயுதம், தாரகனுடைய மார்பையும் கிரொளஞ்சுவெற்றையும் பிளந்தபோது உலகினுள்ளோர், “பூமி பிளந்தது” என்றும், “மகாமேருமையே வெடித்தது” என்றும், “அண்டமும் உடைந்தது” என்றும், பற்பலவாறு பேசிக்கொண்டார்

கள். வேற்படை தன்மாற்பை ஊடறுத்துச்செல்ல, தாகாசரான் அநந்தகோடி இடிகள்போல் ஆர்த்து, எழுந்து துள்ளிப் பூமிபிலே வீழ்ந்து, பதைபதைத்து மாண்டான்.

தாசன் மடிந்ததையும், கிரொஞ்சுகிரி பிளந்ததையும் மாலய னாதி வானவர்களும் மாதவர்களும்கண்டு, ஆரவாரித்தார்கள்; ஜிஹூர்கள்; பாடினார்கள்; கரமலர்கூப்பிக் கந்தவேளைத் துதித்தார்கள்; பூ மழை பொழிந்தார்கள்; வலம்வந்து வணங்கினார்கள்; பன்முறை வீழ்ந்து வீழ்ந்துத் தொழுதார்கள்; போனந்தப் பெருங்கடலில் முழித்தார்கள்; கிரொஞ்சுகிரி யழிந்தவுடனே அதனுள் துயின்ற வீரவாகுதேவர் முதலியோர் மயக்கமீகம்பெயுந்து, வினைந்து சென்று குயாக்கடவுளுடைய குராகழிலே வணங்கித் துதித்து நின்றார்கள். கருணைக்கடலாகிய கந்தவேள், அவர்களைக்கே, 'நீங்கள் அனை வரும் தாசகனால் கிரொஞ்சுமலைக்குள் மாயையில் அழுந்தி, அறிவிழந்து அல்லற்பட்டீர்கள் போலும்' என்று திருவாய்மலர்ந்தருளினார். அவ் வருளுரையைக் கேட்ட வீரர்கள் 'எந்தையே! உமது திருவருள் இருக்கும்பொழுது அடிபெங்கள் அல்லற்படுவதுண்டோ? மாயையுடன் உறங்குவோர்போல் இன்பமுற்றோமேயன்றி, கிரொஞ்சுகிரி யின் மாயத்தால் சிந்தும் துன்பமடைந்திலேம்' என்று விண்ணப்பம் செய்தார்கள். அப்பொழுது அறுமுகவள்ளல் வீரவாகுதேவரை யழைத்து முன்னே தாசர்கள் விடுபத் தாம்பற்றிய சிவப்படைக் கலத்தை அவர்கையிற்புகொடுத்து, 'இதனை நீ வைத்துக்கொள்வாய்' என்று திருவாய்மலர்ந்து நிருவருள்புரிந்தார். அதன்பின்பு, தாசக னுடைய போரில் இறந்த பூதர்கள் எல்லோரையும், நீங்கள் யாவரும் எழுந்திருங்கள்' என்று எழுப்பி, பூதகேசனைகள் குழு தேவர்கள் துதிக்க, வீரர்களுடன் போர்க்களத்தினின்றும் புறப்பட்டார்.

(தொடரும்)

### உபதேசம்.

கடவுள் பரிசுத்தமானவர். அசுத்தமான இடத்தில் இருக்கமாட் டார். அவர் உனது உள்ளத்தோயிலில் எழுந்தருளியிருக்க நீ உன் உள்ளத் தைப் பரிசுத்தமாக வைத்துக்கொள்ளவேண்டும். மது, மாமிசம், கோபம், பொழுமை, தீய எண்ணங்கள் முதலியவைகளால் உன் உள்ளத்தை அசுத்தப் படுத்தாதே அசுத்தமாக்கிக்கொண்டால் உன் உள்ளத்தில் கடவுள் தக்கி யிருக்கமாட்டார்.

உ  
கார்த்தியேசன் துணை.

## கற்பு குர்ப்பு

(123-வது பக்கத் தொடர்ச்சி)

"கொண்டான் குறிப்பு அறிவான் பெண்டாடி" என்ற அமுத மொழிப்படி, பெண்கள் நாயகனுடைய குறிப்புணர்ந்து, எவாமுன் னரே அவனுடைய கருத்தைச் செய்துமுடிக்கவேண்டும். குறிப் புணர்தல் என்னும் தன்மையை ஆடவர்களைக்காட்டிலும் பெண்கள் அவசியம் அனுசரித்தல் வேண்டும். கணவனுடைய முகத்தைக்கண்டு, அம்முகக்குறிப்பால் அவனுடைய உள்ளத்தை ஊகித்தந்தல் வேண் டும். அவ்வாறு குறிப்புணர்ந்து நடக்கும் மனைவியைக் காணுந்தோறும் கணவனுடைய உள்ளமும் உடம்பும் பூரிக்கும்.

"குறிப்பிற் குறிப்புணர்வாமை உறுப்பினுள் யாது கொடுத்திங் கொளல்"

என்று பொய்யாமொழிப்படி குறிப்புணரும்பத்தினியைக் கணவன் தனது உயிரினுஞ் சிறந்தவனாக எண்ணி இன்புறுவான். மிக்க வறுமைப்பினியால் வாடிபெலிந்த குசேசுமுனிவருடைய மனைவியார் இக்குறிப்புணர்வதிலே சிறந்தவராக இருந்தார் என்று அந்நூலாசிரியர் கூறுமாறு காண்க.

"மாசிலாக் குலத்து வந்தான் எருவிநித் தவப்ப வூட்டு நேசமிக் குடையான் ஓடாங்க னீனப்பிந் தொழந் நீரான்"

தங்கள் வீட்டில் உலாவும் எறுப்புக்குக்கட உணவுகிடைக்காது, அத்துணை தரித்திர வாழ்விருந்து அந்த அம்மையார் கணவனுடைய நினைப்பிற்கு நினைவின்வண்ணம் ஒழுகிக்கொண்டு வந்தொன்பது எத்துணைவியப்பைச்சுருகின்றது.

இத்தகைய சதிபதிகளுக்கு எக்காலத்திலும் கருத்துவேற்றமையுண்டாகாது. கணவனும் மனைவியும் சரிந்தால்மட்டும் ஒன்றாட்டு வாழ்வது சிறந்த வாழ்க்கையாகாது; அது மிகுக் வாழ்க்கை; இரு வருடைய கருத்தும் ஒரே கருத்தாக இருத்தல்வேண்டும்; "காசல் இருவர் கருத்தொருமித்து ஆதரவுபட்டதே இன்பம்" என்ற அமுத



வாக்கையுள்ளார்கள். ஆதலால் கருத்தொருமித்து நடாத்தும் வாழ்க்கையே இன்பவாழ்க்கை; அதனாலே புனிதவாழ்க்கை; அந்த வாழ்க்கையில் அனுத்தினையும் துன்பமுண்டாகாது; வேறு வகையில் துன்பமுண்டாயினும் பகவதின் கண்ட பரிபேரில் நீங்கும். அநேக குடும்பங்களிலே கணவனுடைய எண்ணம் ஒன்று; மனைவியினுடைய எண்ணம் ஒன்றாக, கணவனின் தன் எண்ணத்திற்கு இணங்கவில்லை யென்று மனைவி வெறுப்பதும்; மனைவியைத் தன் எண்ணத்திற்கு இணங்கவில்லை என்று கணவன் வெறுப்பதுமாக வெறுப்பும் துன்பமும் நடப்பாடுகின்றன. அவர்கள் ஆழ்ந்து சிந்தித்து ஒருமைப்பாட்டையடைதல்வேண்டும். கிருத்தினரை உபசரித்தல், கடவுள் வழிபாடு, உறவினருக்குத் தவறல், ஏழைகளுக்கு இரங்குதல் முதலிய எல்லாக் காரியங்களிலும் நாயகனும் நாயகியும் ஒத்த மனமுடையவராய் விளங்கி அவைகளை இனிது முடித்து இன்புறவேண்டும்.

நாயக நாயகியர் சருடம்பிற்று ஒருமிரென ஒன்றுபட வேண்டும்; அங்ஙனம் உயிர் ஒன்றாய் உடர்பு இரண்டாய் வாழும் வாழ்க்கையினுண்டாகும் இன்பத்தைப்போல் இந்நிரலோகத்திலும் இன்ப வாழ்க்கையினுண்டாகாது. அந்த வாழ்க்கையை மேற்கொண்ட கணவன் மனைவி மடிந்தபின் வேறொரு மனைவியை மணப்பினாந்து இன்புறமாட்டான்; எல்லாவற்றையுறந்து வெறுமாட்டான் புறப்பட்டுத் தவறாமுக்கத்தில் நின்று மான்வான். மனைவியும் கணவன் உயிர் துறந்த அக்கணத்திலேயே உயிர்துறந்து நாயகனுயிரைத் தொடர்ந்து செல்லுவான். ரூபன்மன் உயிர் துறந்தான் என்ற சொல் அவனுடைய மனைவியாகிய பதுமகோமணியை, தனது செவியில் செல்லுமுன்னரே உயிர் துறந்தான் என்னும் செய்தி கந்தபுராணத்தார் கோட்கப்படுகின்றதல்லவா?

காவன் மன்னவ விரிந்தன னெனுமரை கன்னித்துள் மேல மெல்லிய லசனியே றுண்டுவேம் பணியேயே நேயி யாகிய பதுமகோ மனமெனுந் தீநுமங்க யாவின் நீக்கின டலையன் யாகிய ததுவன்றே.

இத்தகைய மற்றொரு உத்தம சரித்தரையும் கேட்கின்றோம். அது வருமாறு காண்க. ஒரு நகரத்தை யறநெறி தவறாது ஒரு மன்னன் அரசுபுரிந்துவந்தான். தன்னாலும் தன் பரிசனத்தாலும் பகைவர்களாலும், கன்வர்களாலும், பிருக்கனினாலும் குறுகளுக்கு யாதொரு இடையூறுமின்றி நாட்டைப் பரிபாலித்துவந்தான். அய

மன்னனிடத்திலே சகல குணங்களும் பொருந்தியிருந்தன. அரசனுக்கு இருக்கவேண்டிய எல்லா அங்கங்களும் ஆர்ப்பண்ணிடம் அமைந்திருந்தன. காட்சிக்கு எளியனாய், காண்டற்கு இளியனாய் விளங்கினான். அத்தகைய மன்னனுக்கு வாழ்க்கைத்தனையாக அமைந்தவன் பெயர் ஜோதிபாய், அரம்பாங்கை கணவனியே கடவுளாகக் கருதுபவன், கலிநிபில் கலிமகளைப் போத்தவன், அழகு அலை மகளையும், அறத்தில் மலைகளையும், பொறுமையில் நிலமகளையுமொத்தவன்; தேனும் பாதும்போன்று இனிமையாகப் பேசுவான்; தனது கணவனுடைய கருத்திற்கு நடப்பான்; தனது வேலைக்காரிகளையும் கடித்து வன்சொல் வழங்கமாட்டான்; கணவனுக்கு முன்னெழுந்து பின்னுறங்கும் பெருந்தகையையுடையவன்; கணவனுக்கு ஆயுளும் புகழும், செல்வமும் மிகமிகப்பெருகமாறு பற்பல நோன்புகள் கோற்பான்; தான் அரசியாக இருந்தும், தன்னிடத்தில் ஆயிரக்கணக்கான பணியாளர்களிருந்தும் கணவன் உணவுக்கு வந்தபோது, சரணே அருகிருந்து, அன்னை மகனுக்கு அன்னத்தை ஊட்டுவதுபோல், கணவனுக்கு அன்னத்தை ஊட்டுவான். இத்தகைய கற்புடைய பத்தினியைப்பெற்றதற்கு மன்னன் பலகாலும் மகிழ்வான். அந்நாட்டிலுள்ள குமுகன், “குணமே ஒரு வடிவமாகத்தோன்றிய இந்த மகாராணியை நாம் அரசியாகப் பெறுவதற்கு என்ன மாதவன் செய்தோமோ,” என்று விமர்சனம் செய்து வணங்கி வாழ்த்துவார்கள்.

இத்தகைய மற்றுண நங்கையுள் மன்னன் வாழ்ந்துவரும் நாளில், ஒருநாள் ஏழாவதுமாதமேல் அழகிய ஆசனத்தில் மன்னன் தனது மனைவியுடன் வீற்றிருந்தான். மெல்லிய சுகந்த காற்று வீசிக் கொண்டிருந்தது; மாலிகேயம்; கதிரவன் தன் கதிர்க்கையெல்லாம் ஒக்கிக்கொண்டு மேற்கடலிலே நீராடச்செல்பவன்போல் செக்கின்றான்; பரவைகள் இனிமையான சித்தகணியைப் பாடிக்கொண்டு தங்கள் கூடுகளுக்குச் சென்றுகொண்டிருந்தன; அநேக பத்தர்கள் அரம்பலை கோர்த்தில் சந்திச் சபதபங்களை முடித்துக்கொண்டு தெய்வவழிபாட்டிற்காக தேவாலயத்திற்குச் சென்றுகொண்டிருந்தார்கள்; காதலிகள் தம் காதலர் வருவழியிலே விழிவைத்து எதிர்பார்த்துக்கொண்டிருந்தார்கள்; இட்டு உண்ணாதவன் செல்வம் எவ்வாறு விரைகியழியுமோ அவ்வாறு வானவில் தோன்றி மறைந்தது; ஒவ்வொரு வீட்டிலும் வீட்டின் முன்புறத்தில் தண்ணீர் தெளித்து கோலமிட்டு தீபங்களை ஏற்றி, ‘அதிதிகள் யாராவது உணவுக்கு வருவார்களா’ என்று

எதிர்பார்த்துக்கொண்டிருந்தார்கள்; எல்லா ஜலபங்களிலும் டாம் டாம் என்று கண்டாமணிகளின் நாதம் வானத்தை யளவியது; காற்று வாய்ந்துவந்தகாக அநேகர் வெட்டவெளிகளில் பரத்தையர் மனம் எப்படியுமையோ? அப்படி உவாசிக்குகொண்டிருந்தார்கள்; வீடுகள் தோறும் இளஞ்சிறுமிகள் விண்ணையாக குரலுக்கும் விண்ணுக்கும் கத்திருவர்கள் நானாமாறு இனிமையாக குரலுக்கும் விண்ணுக்கும் பேதமின்றிப் பாடிக்கொண்டிருந்தார்கள்; அப்படியே சேரத்தில் அந்நகரமானது அமராவதி நகரினும் பன்மடங்கு சிறப்புடையதாக விளங்கியது.

மன்னன் மேல்மாடியில் மனையையே சேர்க்கி, “இவ்வுட்சியே தேவியே இவ்வாறு உறுவெடுத்து வந்திருக்கின்றனோ” என்று ஐயுற்றான். அவன் அருகில் வீற்றிருக்கும் தன்னை சகிதேவியின் அருகிலிருக்கும் இந்திரனாக நினைத்துக்கொண்டான்; “கற்பின் வடிவாய் வந்த இக்காரிகையுடன் சேர்ந்திருக்கும் இன்பத்தினும் சிறந்த இன்பம் இந்நிவோகத்திலும் இல்லை” எனது எண்ணினான். ஒருகாலத்திலும் குவியாத ஜோதிபாயினுடைய நிருபுகாரணிந்தத்தை சேர்க்கி, “பெண்கள் நாயகமே! உலகம் போற்றும் உத்தமியே! நீ சிறப்பசால் திரம், சங்கீத சாத்திரம், பாக சாத்திரம், தரும் சாத்திரம் முதலிய எல்லா சாத்திரங்களில் தேர்ச்சியுற்றிருக்கின்றாய்; உனக்கு எல்லாம் தெரிந்திருக்கின்றது; ஒன்றும்பட்டும் தெரியாது” என்றான். ஜோதிபாய், “மன்னர்பெரும்! உலகில் எல்லாநீதேரிந்தவர்களும் எதிர்திரியாதவர்களும் கிடையாது; எனக்குத்திரியாத விஷயத்தைத் தாங்கள் கற்றுக்கொடுக்கலாமே? என்றான். அரசன் புன்முறுவல்கொண்டு, “அழகிய ஆருநீர்க்காசலியே! உனக்குத் தெரியாத விஷயமாகிய அதனைக் கற்றுக்கொடுத்தாலும் நீ கற்றுக்கொள்ளமாட்டாய்; உனது உலகம் கற்றுக்கொள்ளவும் முடியாது” என்றான். ஜோதிபாய், “அது யாது?” என்றான். மன்னன், “பெண்ணே! வேலைக்காரிகளிடத்திலும் உனக்குக் கோபிக்கத்தெரியாது; அந்தக் கோபமென்பதே எப்படியிருக்குமென்பது உனக்குத் தெரியவே தெரியாது; அனைக்க கற்றுக்கொடுத்தாலும் உனக்கு வராது; பொறுமைக் கடலாகிய உண்ணக்கண்டு அது பயப்படுகின்றது” என்று சொல்லி அவனைத் தழுவினான். ஜோதிபாய் மகழ்ந்து, “தருமதுரையே! தனுர்வேதம் ஆழ்வேதம், அருத்தவேதம், புராணம், நியாயம், ஸ்மிருதி, சுருதி முதலிய எல்லாவற்றையுமுணர்ந்த தாங்கள், வந்து கேட்போர்க்கு

“இல்லை” என்றுசொல்லும் கற்றுக்கொள்ளவில்லையல்லவா? இல்லை யென்று சொல்லவே தங்களுக்குத்தெரியாது; அனைத்த தாங்கள் கற்றுக்கொள்ளமுடியுமா? என்று கேட்டான். மன்னனும் ஜோதிபாயும் இப்படியிப் பொருடங்கிய மொழிகளைக்கூறிப் பேசிக்கொண்டிருந்த போது தெருவில் பெருஞ்சத்தமுண்டாயிற்று; மன்னன் எழுந்தார் தான்; உயிற்ற உடல் ஒன்று அலங்கரித்த விமானத்தின்மேல் போய்க்கொண்டிருந்தது; அனைத்திராடாந்து ஒரு இளம்பெண் இரத்தியையாத்த அழகுடன் கண்ணீரால் பூமியை நனைத்துக்கொண்டு உடன்கட்டையேறுப்பொருட்டு தொடர்ந்துசென்றான். அவளை எல்லோரும் அவள் கற்புக்கு மெச்சி வணங்கினார்கள். கணவன் இறந்த பின் வாழாமாட்டேன் என்று உடன்கட்டையேறும் உத்தமியைத் தொடர்ந்து அநேகர் போய்க்கொண்டிருந்தார்கள். இக்காலகியைக் கண்ட மன்னன் அற்புதமெய்தி, மனையையே சேர்க்கி, “மாதர் மணியே! என்ன அற்புதம்; என்ன பரிதாபம்! நம் நாட்டில் இது ஒரு பெரியசம்பவம். கணவன் மரித்தபின் உயிர்தரித்துவாரேழென் என்று இந்த உத்தமி உடன்கட்டை ஏற்போகின்றளாம்; என்னே! இவளுடைய அன்பு? அன்பு எதைச்செய்யாது? உயிரையும் தரும் பாக்குகின்றது” என்று மனமுருகிச்சொன்னான்.

ஜோதிபாய், “நாயக! இவ்வின்பப்பற்றித் தாங்கள் அற்புதமடைவது சிறந்ததாக ஆகாது; இதுஒன்றும் அற்புதமல்ல; அன்புமல்ல; வெறுக்கத்தக்கதே” என்றான். மன்னன் திரிக்குட்டான். “பெண்ணே! ஏன் அப்படிச்சொல்கின்றாய்? உடன்கட்டையேறுவது என்றால் அது அன்பு பிணல் நிகழப்படுவதல்லவா? அற்புதமல்லவா? என் இதை நீ வெறுக்கின்றாய்?” என்று வினவினான். ஜோதிபாய், “வேந்தாவேந்தே! உத்தமக்கற்பும், தலைப்பும், நிறைகுணமுமுடைய பெண்கள் தன் கணவன் மான்டான் என்னுடைய செவியிற் புகுமுன்னரே உயிராகிடுவார்கள்; கணவன் உயிர் பிரிந்துகொண்டிருக்கும்போதே ஒரு கற்புடைப்பெண் தானும் உயிர்துறந்து சுவர்க்கலோகத்தில் தனது கணவனை வரவேற்கச்சென்றான் என்றால் அதுவல்லவா? உத்தமக்கற்பு; அதுவே சிறந்த அன்பு; மத்திமக்கற்பும், இடையடையும் உடைய பெண்கள், கணவன் இறந்தபின் சிறிதுசேமிருந்து கணவனுடன் கட்டையேறுவார்கள். அதமக்கற்பும் கடையடையும் உடைய பெண்கள் கணவனின் மிகவுயர்வருந்தி, வெள்ளைப்பூவையடுத்தி மயிர் களைந்து, ஒருவேளையுண்டு, தரையிற்படுத்தி, தாம்பூலம், இராவணவு

என்னையுமுதலியவைகளை நீக்கி, ஆலயவழிபாடும் திருப்பணிகளும் செய்துகொண்டு, ஜெபதப விரதங்களை மேற்கொண்டு, இளைத்த உடம்புடன் தவவொழுக்கத்திலிருப்பார்கள். இவ்வாறு தலை, இடை, கடை என அன்பு முன்று வகையாகப் பிரிக்கப்படுகின்றது. ஆதலால் உடன்கட்டை பேறுவது இடையன்பே தவிர, தலையன்பாகாது. மன்னரேரே! உடன்கட்டையேறும் இப்பெண்ணைப்பற்றித் தாங்கள் அற்புதமடையவேண்டாம்; இது சிறப்புடைத்தன்று” என்று சொன்னான்.

இவ்வசனங்களைக்கேட்ட மன்னன் இறும்பூதபதி, “இவளிடம் அத்தகைய தலையன்பு உளதா? சொல்லுவது யார்க்கும் எனது; சொல்லியவண்ணம் நடப்பது அரிதல்லவா?

சொல்லுதல் யார்க்கும் எளிதாய்வாது

சொல்லிய வண்ணத் தேயல்

சமயம் வந்தபோது இதனைப் பரிசோதித்து உண்மையுணர்வோம்” என்று எண்ணி அது சமயந்தமான பேச்சை நிறுத்திக்கொண்டான்.

கிலாசர்கள் சென்றன; மன்னன் ஒருநாள் மந்திரி, வேடர்வில் லிபருடன் வேட்டையாடக் காண்கத்திற்குச் சென்றான். உச்சிப் பொழுதுவரை வேட்டையாடினான்; பல மிருகங்களைக் கொன்றான்; பலவற்றை விரட்டியடித்தான்; களைத்து ஒரு கூடாரத்தில் தங்கினான்; மாலிகேசரம் வந்தது. அம்மாலிகேசரத்தில் மெல்ல கூடாரத்தின்முன் உலாவிக்கொண்டிருந்தான். முன்னொருநாள் அரண்மனை மேல்மாடியில் தனக்கும் மனைவிக்கும் நிகழ்ந்த உரைத்தொகுதிகளை அம்மாலிகேசரம் நினைவூட்டியது “தலையன்புடைப்பெண்ணார் கணவன் மரித்தான் என்ற சொல் கன்னத்தின் செல்லுமுன்னரே உயிர்துறப்பார்” என்று நமது பனைவி சொன்னால்லவா? அவ்வன்பு அவளிடமுளதா என்று இப்போது சோதித்து அறிபவாம்” என்று என்னி ஒரு ஏவலர்வை கோக்கி, “நீ கிணாந்துசென்று மகாராணியிடம் ‘அரசனைப் புலியடித்துக் கொண்டுவிட்டது’ என்று கூறு; அப்படிக்கூறியவுடன் அங்கு என்ன நிகழுகின்றதென்பதைத் தெரிந்துகொண்டுவோ” என்று அனுப்பினான். அப்பணியாளன் காற்றினும் கிராந்து அரண்மனைக்கு வந்து, ஜோதியமையைப் பணிந்து கண் கலங்கிதின்றான். ஜோதிபாய் அலகை கோக்கி, “அப்பா! ஏன் கலங்குகின்றாய்? என்ன கிஷயம்? சொல்” என்றான். பணியாளன், “அம்மா! நான் எவ்வாறு கூறுவேன்? சொல்ல நடுங்குகின்றது; மகாராசா வேட

ஓம் குறாய நம:

## குமரகுருபர ஸ்வாமிகள்

சரித்திரம்.

A. M. நாராயணசாமி அய்யர், மதுரை.

(128-ம் பக்கத் தொடர்ச்சி.)

40-வது நாள் மாலிப்போது வந்தும் குழந்தை வாய்திறந்துபேசவில்லைபென்றால், அவர்கள் அடைந்த துன்பம் அளவிடமுடியுமோ! என்செய்வது! அர்த்தகசாம் பூஜையும் ஆரம்பமாயிற்று; ஆனால் குழந்தையோ பேசவில்லை. பெற்றோர் இருவரும் சித்தம் கலங்கியவர்களாகி செத்திவாண்டவன்முன் பணிந்து, ஐயனே! நீயே தஞ்சம் என்று இருந்தோமே? இன்றோடு 40 நாட்களும் ஆயினவே! குழந்தை பேசினால் இல்லையோ! அப்பேய்க்களை இன்னமும் சோதித்தல் கூடுமோ? தஞ்சம் என்று அடைந்தார்க்கு ஆதரவுசெய்யாது

டையாடப்போன இடத்தில், ஒரு பெருப்புவி ராசாவை அடித்துக் கொன்றுவிட்டது” என்றான். ஜோதிபாய், அவ்வார்த்தை கேட்டுக் கொண்டிருக்கும்போதே “ஆ! பிரானகாரந்தா!” என்று உயிரற்ற உடம்பாக விழுந்துவிட்டான். அவன்சொல் முடியுமுன்னமே அவ் ணுடம்பினின்றும் உயிர் பிரிந்துவிட்டது. என்னே அன்பின் மாண்பு! அருகிலிருந்தோர் அனைவரும் அசைவற்றுநின்றனர். பணியாளன் இத்துன்ப சம்பவத்தைக்கண்டு தலையிடித்துக்கொண்டு ஓடி மன்னிடம் நிகழ்ந்ததைக்கூறினான். இடியைக்கேட்ட பண்கம்போல் மன்னன் நடுநடுங்கி மூர்ச்சித்தான். மூர்ச்சித்து எப்பயன்? மன்னன் வாழ்க்கையை வெறுத்து தறவிடெற்று தவவொழுக்கத்தை மேற்கொண்டு, சுவர்க்கலோகம்போந்து பனைவியுடன் நெடுக்காலம் இன்புற்றான்.

ஜோதிபாயம்மையினுடைய அன்பே சிறந்த அன்பு. அவ்வன்பு முவுகைத்தையும் அடிமைப்படுத்தும். உலகத்தை ஒற்றுமைப்படுத்தும். அம்வன்பு உலகமெங்கும் ஓங்கி வளர்வதாக. (தொடரும்).

இருப்பது முறையோ? “கருணாகரன்; அடியவர இச்சையில் எவை எவை உற்றன; அவை தருவித்து அருள்பவன்” என்பவை யாவும் பொய்யோ? முதல்மீழால் வைதானாயும் வாழ்விப்பவன் நீயன்றோ? ஆபத்தாந்தவ! இன்னும் உன் சித்தம் இரங்காத காரணம் யாதோ? நீயே சிற்றங்கொண்டால் அடியெங்கள் எப்படி இனி யாரை நத்தி உய்வோம்; இனி எங்கட்குப் புகலிடமேது? அடியெங்கள் கொண்ட உறுதிப்படி கிடியுமுன் சூழ்ந்தை குமரகுருபரன் வாழ்திருந்து பேசுகிலையெயானால் இவ்விடத்திலேயே இறப்பது தின்னம். அப்படிச்செய்வது உனக்கு இழுக்காகும்; ஆதலின் எமது குறையைத் தீர்ப்பாயாக! எனப் பலவிதத்தாலும் மனங்கலங்கி நெஞ்சம் நெக்குறுக்க கசிந்து கதறினார்கள்.

இவ்வாறு பெற்றோர்கள் இருவரும் மனம் சோர்ந்து கண் அயரவும், அடியார்க்குநரும் அயிலவேல் கடவுள் அர்ச்சகர் வடிவங் கொண்டு அத்தனியினங்குழிவி அருகில்கொண்டு, “அப்பனே குமரகுருபர! எனத் தட்டியெழுப்பி, “சூழந்தாய்! இனி நீ உனது மௌனம் நீங்கி சைவமதத்தை தானியில் தடைக்கச்செய்வாயாக” எனக்கூறி, அவர்தம் நாவில் சடக்கூர மந்திரத்தை எழுதி, சைவசித்தாந்த உணர்ச்சியையும் நல்கி மறைந்தார்.

அர்ச்சகர் வடிவாகத் தன்முன் தோன்றிய உருவம் மறைதலும் குமரகுருபர திகைத்தவராகித் தம்முன் தோன்றியது முருகட்பெருமானே எனத்தோர்ந்து, “அந்தோ! என்முன் வலியவந்து அடியேனை ஆட்கொண்டது அதுமுகன் என்பதை அறியாமற்போயினே! என்னே என் மதியினம்?” என மனமடங்கி, முருகா! முருகா!! முருகா!!! எனப்பலம்பலுற்றார்.

மழையை எதிர்பார்த்துக் காய்ந்துகிடக்கும் பயினைப்போன்று குமரகுருபர வாழ்திருந்து பேசும் சொல்லி எப்பொழுது ஆர்வமுடன் கேட்போம் என்று வாடிக்கிடக்கும் பெற்றோர்கள் சூழ்ந்தையின் வாக்கிலிருந்து முருகா என்ற தேனினும் இனிய சொல் தோன்றலும், சூழ்ந்தையின் அருகில்கொண்டு, அவரை வாரிபெடுத்து உச்சிமோந்து தாம் செய்வது என்ன என்பதையும் உணராதவர்களாகி, ஆனந்தமேலிட்டால் ஆடினர், பாடினர் “அப்பனே! முருகா! ஆபத்தாந்தவன்! அனாதாக்கூகன்! அடியார்க்குந் தவன்! தினபந்து தினதயானா! என்பது உனக்கே பொருந்தும்; நீயே உண்மைத்தெய்

வம் நீயே! கலியுகவரதன் எங்கள் வயிற்றில் பாலி வார்த்த பாலாபி ஷேகா! பன்னிருகையா! பரமனது அருள்புதல்வர! மாதவள்ளி மோகனு!” எனப் போற்றித்துதித்தனர்.

பின்னர் எல்லோரும் கடலை அடைந்து ஸ்நானஞ்செய்து காத்தவோடு கந்தன்முன் அடைந்து கழலடிபோற்றிக் களித்தனர். அவ் வமயம் குமரகுருபர அருள் அறிவின் ஊற்றெழுந்து, அன்புமதச் சொல்பெருகி, பொருள் அழகு வாய்ந்த “கந்தர் கலிவெண்பா” ஆகிய பாமரையைத்தொடுத்து செந்திலரண்டவன் திருவடியில் சூட்டி னார். பிறந்ததுமுதல் ஐந்து ஆண்டுவரையிலும் வாழ்திருந்து பேசாத சூழ்ந்தையானது, எண்ணிலாக்கைகளின் நல்லறவையும், அல்வறவை பிறருக்கு இனிது எடுத்து இயம்பவும் பெருஞ்சொல்மாரி இயற்றும் திறமையும், கேட்டாரைப் பிணிக்கும் கௌரவர்களையும் கேட்க விரும்பும்புடும் இனிய கவிபுறது பொழிந்திடின அக்குழந்தையின் பெற்றோர் அடைந்த ஆனந்தம் அளவிடப்பெறுமோ?

ஈன்ற பொழுதில் பெரிது உவந்தூர் தன்மனை  
கான்றேன் எனக்கேட்ட தாய்

தாயும் தந்தையரும் இன்னும் சிலகாலம் செந்திலம்பதியில் இருந்துவந்தனர். அவ்வமயம் ஓர்சான் குமரகுருபர தமக்கு ஞான மாரக்கம் நல்கும்படி ஞானபண்டிதன்முன் குறையிடுத்து நின்றலும், தந்தைக்கு உபதேசித்த தன்யன், “அன்பனே! குமரகுருபர! நீ இவ்விடம் நீங்கி வடநாட்டை நோக்கிப்போவாயாக; உனது மொழி யார்முன்பு தடைபடுகிறதோ அவரே உனக்கு ஞானமாரக்கம் நல்கும் ஆகிரியர் ஆவர்; அவரால் உன்மை அறிவைப்பெற்று சைவம் தானி யில் தழைக்கச்செய்வாயாக” என்று விண்ணிடை ஓர் பேரொலி யைத் தோற்றுவித்தார், அப்பொழுதிக்கேட்ட குமரகுருபரரும் அவர் தம் பெற்றோர்களும் பேர் உவகையுற்று நல்லதோர் களில் தாம்வதி யும் திருக்கைவாய்புரத்தை அடைந்தனர்.

அசார்க்கினைவாட்டி மிகவாழ அமர் சிறைமீட்டின பெருமானது திருஅருட்டன்மையால் ஐந்து ஆண்டுகள் வரையும் பேசாத சூழ்ந யானது திரெளன்து அருட்கவிபாகிய கம்மழை பொழிவது கேட்ட பலரும் இவ்வதிசயம் காண, ஷண்முகச்சிகாமணிக் கவிராயது இல் ஷத்தை அடைந்தனர்- வந்தவர் யாவரையும் ஷண்முகச்சிகாமணிக் கவிராயர் அன்புடன் வரவழைத்து கிருந்துகன்செய்து அனுப்பினார்.

குமாகுருபார் திருக்கையாபாத்தில் இருந்தவரையில் அவரைக்கண்டு களிக்க அவன் அடைந்த கூட்டம் கூறுந்தாம் உடையதன்று ஓர் நாள் கையாநாதாது ஆறியம் அடைந்த குமாகுருபார் ஆங்கு எழுந்தருளியுள்ள ஆளிமுண்டகன்டர்க்குக் “கூடலைக் கல்பகரி” என்ற அரிப பாமாலைபயச்சூட்டிக் களித்தனர்.

நாட்கள் செல்லச்செல்ல அடிகளது நாட்டம் முழுவதும் ஓராலு கிரியலாத் தேடி அடைந்து அவர்பால் அறிவுரைபெறவே முனைந்த படியினால் அவர் தம் பெற்றோர்பால் விடைபெற்றுக்கொண்டு, தம் தம்பி “குமாரனும்” பின்னதாடா, முருகப்பெருமான் கூட்டினையிட்ட வண்ணமே வடதிசைகளேக்கிப் புறப்பட்டவாகி, திருநெல்வேலி, திருச்சுற்றுவம், திருச்சழியல், திருக்கானப்பேர், திருவட்டாளை, திருப்புனவாயில், திருக்கொடுங்குன்றம், திருப்புலனம், திருப்பத்தூர், திருப்பெருந்துறை, திருவிராமேச்சுவரம் முதலிய திருத்தலங்களில் எழுந்தருளிய முத்திக்களைக்கண்டு தெரிசித்துக்கொண்டும், ஆறுபடை வீட்டினுள் முதன்மையதான திருப்பாங்குன்றம் அனுகி, ஆண்டு கோயில்கொண்ட கோழிக்கோடியோன் அடிபணிந்தார்: அவ்விடத்தில் முருகப்பெருமானது அருகில் ஆமாந்துள்ள மீனாம்பிகை அம்மை யாரை தரிசித்த அடிகட்கு திருவாலவாயிலில் திருக்கோயில்கொண்ட திகம்பரியின் திருவுருவுத்தோற்றம் காண அவர்வண்டாயிற்று. அடிகளது ஆர்வங்கண்ட மீனாம்பிகை அம்மையார் அன்றாக்குத் தமது இளந்திருக்கோலத்தை நீனைப்பூட்டி அருளினார். உடனே அருட்கவியானார் அம்மையாரின் அருளால் பிள்ளைக்கவி ஒன்று பாடினார். அடிகளின் பாமாலையின் பரிமணத்தினால் பரவசம் ஆகிய பர்வதாராஜனின் குமாரியாம் மீனாம்பிகை அம்மையார் அன்றிவடி பான்முகாட்டாசனும் திருமலைபாக்கனது கனகில் தோன்றி, “மனுநெறி தவராது ஆட்சியுரிமும் மன்னு! நமது செல்வனும் செல்வோட்பாமனது அருள்பெற்ற அன்பன் குமாகுருபான் நம்மது இனிமைவாய்ந்த பிள்ளைத்தமிழ் பாடியுள்ளான்; அவன் இவ்வமயம் திருப்பாங்குன்றத்தில் இருக்கின்றான்; நம்மைக்காண மிகவும் ஆவலுக்கொண்டுள்ளான்; ஆதலின் நீ உனது பரிவாரங்கூழ்த்திருப்பாங்குன்றம் சென்று அவனை மரியாதையுடன் அழைத்துவந்து எமது திருமுன்பு அக்கவியை அரங்கேற்றுவாயாக என்று கூறினார்.

(தொடரும்).

END OF  
ISSUE